साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 47, अक्टूबर(द्वितीय) , 2018

150 वीं गांधी जयंती:

गांधी के महान बनने का रहस्य

किताबें : जिन्होने बनाया 'मोहन' से 'महात्मा'

घनश्याम बादल

निःसंदेह गांधी के 'महात्मा' होने के पीछे एक नहीं अनेक कारण हैं । पर, जो कारण सबसे ज़्यादा स्वयं गांधी जी को अपने उत्थान हेतु सबसे ज़्यादा उपयुक्त लगा वह था किताबों का योगदान । गांधी किताबें लिखने व पढ़ने दोनों काम एक साथ करते हैं । वें अपनी किताबों से दुनिया को आज भी राह दिखा रहे हैं । जबकि उन्होंने खुद माना है कि उनके उत्थान के पीछे सबसे बड़ी भूमिका किताबों की ही रही है ।

भले ही छात्र जीवन में वें बहुत मेधावी छात्र न रहे हों पर बाद में उन्होनें न केवल पढ़ा ही अपितु लिखा भी खूब इसी लिखने -पढ़ने ने उन्हे मोहन से 'महात्मा' बनाया । गांधीजी द्वारा लिखी गई पुस्तकों और उनके भाषण से दुनिया के करोड़ों लोगों ने वैचारिक ज्ञान हासिल किया। उनकी लिखी 'मेरे सत्य के प्रयोग' व 'हिंद स्वराज' जैसी पुस्तकों से दुनिया ने ऊर्जा हासिल की और अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने की राह तलाशी।

'हिंद स्वराज' ने दुनिया के सामने एक ऐसी अर्थव्यवस्था का खाका रखा जिसकी हर इकाई में उत्पादक और उपभोक्ता दोनों हैं और जिसमें बिचौलियों के लिए कोई जगह न हो। बुनियादी तालीम के माध्यम से उन्हानें भारत में शिक्षा के स्वरूप व ज़रुरत पर बहुत कुछ कहा माई एक्सपेरिंमेंट विद ट्रुथ ' में अपने जीवन को एक खुली किताब की तरह उकेरते हुए अपनी सोच पर खुलकर लिखा । गांधी जी ने लगातार आंदोलनों में लगे रहने पर भी जितना लिखा वह अचंभित कर देने वाला है । जेल में , भीड़ में , अकेले में , जब और जहां भी समय मिला वें ;लिखते पढ़ते रहे । अब सवाल है कि वे कौन लोग थे जिनकी लेखनी ने गांधी को महात्मा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई? वें कौन सी किताबें थी जिन्होने ऐ नया गांधी गढ़ने में मदद की उसे राह दिखई । गांधी जी की 150 वीं जयंती पर इस पर विचार करना समीचीन रहेगा ।

श्रीमद्भागवद्गीता

गांधीजी ने गीता बहुत बाद में पढ़ी । उन्होंने खुद इस बात का जिक्र किया है कि कैसे विलायत में रहते हुए दो विदेशी भाइयों ने उनसे गीता की चर्चा की और वें कुछ जानकारी न रहने के कारण शर्मिंदा हुए। वे दोनों भाई थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य थे और अंग्रेजी में एडविन अर्नाल्ड द्वारा अनुवादित गीता पढ़ रहे

थे। इसके बाद उन्होंने गीता को संस्कृत में पढ़ना शुरू किया। उसके एक श्लोक ने ही मुझे गहरे से झकझोर दिया। श्लोक का अर्थ था-'' विषयों का चिंतन करने वाले पुरुष को उन विषयों में आसक्ति पैदा होती है। फिर आसक्ति से कामना पैदा होती है और कामना से क्रोध पैदा होता है। क्रोध से मूढ़ता आती है और मूढ़ता से स्मृति लोप होता है। स्मृति लोप होने से बुद्धि नष्ट होती है और जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है उसका नाश हो जाता है।'' इसके बाद उन्होंने पूरी गीता पढ़ी और माना कि यह अमूल्य ग्रंथ है।

ऑन द ड्यूटी ऑफ सिविल ओबिडियंस और 'वाल्डेन'

इन दोनों किताबों के लेखक थारो अमेरिका के थे। वे उतने ही बड़े दार्शनिक थे जितने बड़े कवि और लेखक। थारो के जिस विचार से गांधी प्रभावित हुए, वह सादगीभरा और विचारों की शुद्धता भरा जीवन था। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर भी उनकी नजर थी। सविनय अवज्ञा आंदोलन पर उन्होंने लेख लिखा जिसमें उन्होंने अहिंसात्मक मूल्यों के साथ विरोध करने की ताकत पर जोर दिया। गांधीजी इस लेख से काफी प्रभावित हुए। हालांकि उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अपनी सत्याग्रह की विचारधारा उन्होंने इस लेख से हासिल नहीं की।

द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू

रशियन साहित्यकार लियो टॉलस्टाय की इस पुस्तक ने 'अनटू दिस लास्ट' के बाद उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया। हालांकि टॉलस्टाय की यह पुस्तक वार एंड पीस और अन्ना कैरैनिना जैसी पुस्तकों की तुलना में काफी कम प्रसिद्ध है, इस पुस्तक में एक सच्चे ईसाई की जीवनशैली को टॉलस्टाय ने अपने तरीके से वर्णित किया है। टॉलस्टाय कर्मकांडों के घोर विरोधी थे और रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के तौर तरीकों के बारे में कहते थे कि वह अपनी दिशा से भटका हुआ है। चर्च ने टॉलस्टाय के विचारों को ठीक उसी तरह आध्यात्मिक तानाशाही माना, जैसे गांधीजी को कट्टरवादी हिंदू धार्मिक नहीं मानते थे।

गांधीजी ने टॉलस्टाय के विचारों से प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रीका में टॉलस्टाय फार्म की स्थापना की। इस पुस्तक के बारे में गांधी ने कहा था- ''इस पुस्तक ने मुझे अभिभूत कर दिया। मुझ पर उसकी गहरी छाप पड़ी। इसकी स्वतंत्र विचार शैली, इसकी प्रौढ़ नीति और सत्य के सामने मुझे सब पुस्तकें शुष्क लगीं।

अनटू दिस लास्ट

जेन रस्किन की इस किताब ने गांधीजी को वैचारिक ताकत दी और वे अहिंसा के मूल्य से परिचित हुए। रस्किन की यह रचना सामाजिक असमानता पर केंद्रित थी। रस्किन का मानना था कि किसी के लिए भी यह अनैतिक है कि वह अपने पास संपत्ति रखे और दूसरे उसके अभाव में दुख और संत्रास झेलें। रस्किन ने औद्योगिक क्रांति के विरोधी थे उनका मानना था कि उत्पादन की यह प्रक्रिया लोगों के लिए कठोर और अपमानजनक है। गांधीजी को उनके विचार काफी अच्छे लगे उन्हे पढ़ने के बाद ही उन्होंने फिनिक्स सोसायटी

बनाई। रस्किन की इस किताब से वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उसका गुजराती में अनुवाद भी किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक वह पहुंच सके। हिंद स्वराज में आए उनके विचारों में रस्किन के विचारों की झलक मिलती है ।

बाइबल का न्यू टेस्टामेंट

गांधीजी ने 'न्यू टेस्टामेंट' के बारे में कहा है- "जब मैंने बाइबल का न्यू टेस्टामेंट पढ़ा, तो इसका मुझ पर अलग ही असर हुआ। ईसा के गिरि वचन का मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और उसे मैंने अपने हृदय में बसा लिया । वें ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ ही नहीं पाए। जेनेसिस या सृष्टि रचना का प्रकरण उन्हें बोझिल लगा। उन्होंने कहा है, मैंने बाइबल पढ़ी है यह कह सकने के लिए मैंने बिना रस के और बिना समझे दूसरे प्रकरण बहुत कष्ट से पढ़े। 'नंबर्स' नाम के प्रकरण को पढ़ते-पढ़ते मेरा जी उचट गया। लेकिन जैसे ही मैं न्यू टेस्टामेंट पर आया, मुझ पर जादुई असर हुआ। ईसा के गिरि वचन पर तो मैं अभिभूत हो गया। मैंने उन्हें हृदय में बसा लिया। मैंने गीता के साथ उसकी तुलना की- " जो तुझसे कुर्ता मांगे, उसे अंगरखा भी दे । जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, बायां गाल भी उसके सामने कर दें।" और उन्होने जीवन भर इस सच को गले लगाए रखा।

कुरआन , गीतांजलि इतना ही नहीं उन्होने कुरआन भी पढ़ी जिससे उन्हे मुस्लिम धर्म की काफी जानकारी हुई जो उनके मुसलमानों को अपनी बात मनवाने में कारगर सिद्ध हुई । गांधीजी ने टेगोर की गीतांलिल भी पढ़ी और उन्हेने जी भर कर शेक्सपियर व गुरुनानाक को पढ़ा , कानून की बेहिसाब किताबें पढ़ी ।

यदि कहें कि किताबों के ज़रिए गांधी जी ने जीवन व दुनिया को पढ़ा तो शायद गलत न होगा । गांधी ने केवल पढ़ा ही नहीं गुना और लिखा भी 'हरिजन' का संपादन किया तो 'वैष्णव जन तो तेनै कहिए' का अपने ही तरीके से संशोधन किया । 'रघुपति राघव राजा ' का अपने ही विचारानुकूल संपादन कर उसमें 'अल्लाह' शब्द जोड़ा तो अहिंसा परमो धर्मः को इसी श्लोक के हिंसा वादी धर्म हिंसा तथेव च ' भाग को भी हटा कर अहिंसा को प्रतिष्ठित किया । बेशक गांधी का सबसे प्रसिद्ध रूप राजनीतिज्ञ के रूप में सामने आता है मगर उन्हे महात्मा बनाने का पथ किताबों ने दिखाया ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें